AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

छत्तीसगढ़ में बांस उत्पादन की स्थिति एवं संभावनाएँ

ORIGINAL ARTICLE

Author
डॉ. अरुणेश कुमार गुप्ता
सहायक प्राध्यापक वाणिज्य
विवेकानंद कॉलेज
रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

शोध सार

भारत में बांस प्रचुर मात्रा में पाया जाता हैं। 136 से अधिक विशिष्ट प्रजातियों के साथ देश में बांस की खेती 13.96 मिलियन हेक्टेयर से अधिक क्षेत्रफल पर फैला हुआ हैं। बांस की 136 से अधिक प्रजातियों में 125 देसी एवं 11 विदेशी प्रजातियाँ हैं। भारत में बांस का सालाना उत्पादन करीब 5 मिलियन टन होता हैं। भारत में बांस के संसाधनों का 50 प्रतिशत से ज्यादा हिस्सा पूर्वोत्तर राज्यों और पश्चिम बंगाल में हैं। मध्यप्रदेश में देश का सबसे बड़ा बांस वन क्षेत्र हैं। छत्तीसगढ़ के मुरिया आदिवासी बांस से बनी वस्तुओं पर लोककला, संस्कृति, नृत्य की आकृतियाँ बनाते हैं। बांस को ग्रीन गैसोलीन भी कहा जाता हैं।

मुख्य शब्द

छत्तीसगढ़, बांस, लोककला, संस्कृति.

प्रस्तावना

छत्तीसगढ़ के ग्रामीण क्षेत्रों में बांस की अपनी एक अहमियत हैं, परन्तु बस्तर एवं सरगुजा क्षेत्र में इसकी अलग विशिष्टता हैं। यहाँ के मुरिया एवं अन्य आदिवासी द्वारा बांस से बनाई गयी वस्तुओं को अतिरिक्त रूप से अलंकृत करने हेतु इसकी सतह को गर्म चाकू से जलाकर विभिन्न आकृतियाँ उकेरने की विशेष तकनीक का विकास किया हैं।

वन विभाग की बांस पुनसाक्षार योजना के अनुसार छत्तीसगढ़ का कुल वन क्षेत्र 44 प्रतिशत हैं, जिसमे बांस के जंगल 17 प्रतिशत हैं। 2018 तक छत्तीसगढ़ में 59 लाख (5972200) हेक्टेयर से ज्यादा दर्ज वन क्षेत्र था इसमें से 11 लाख (1106000) हेक्टेयर राज्य के वन क्षेत्र में बांस वाला क्षेत्र है।

शोध के उद्देश्य

1. छत्तीसगढ़ में बांस की स्थिति एवं उससे संबंधित गतिविधि के बारे में ज्ञात करना।
2. छत्तीसगढ़ सरकार द्वारा बांस उत्पादन हेतु चलायी जा रही योजनाओं की संचालन की जानकारी प्राप्त करना।

शोध पद्धति

उपरोक्त शोध पूर्ण रूप से द्वितीयक समंको पर आधारित हैं, जिसके संग्रहण हेतु विभिन्न वेबसाईट्स, छत्तीसगढ़ आर्थिक सर्वेक्षण का प्रयोग किया गया हैं।

1. छ.ग. में बांस की स्थिति एवं उससे संबंधित गतिविधि

- छत्तीसगढ़ में कुल वन क्षेत्रफल का लगभग 17 प्रतिशत बांस वनों का लगभग 11 लाख (1106000) हेक्टेयर

क्षेत्रफल बांस वनों का हैं।

- साल 2006 से 2016 के बीच, राज्य के 32 वन विकास अभिकरणों में बांस रोपण, बिगड़े बांस वनों का सुधार और बांस केन्द्रीय का सशक्तिकरण किया गया हैं।
- किसानों एवं महिलाओं को स्वावलंबी बनाने के लिए 29 महिला रोपणी और 28 किसान रोपणी की स्थापना की गयी।
- बांस शिल्पकारों को प्रशिक्षण दिया गया हैं।
- बांस प्रसंस्करण केन्द्रों में काम करने वाले शिल्पकारों ने 60 राष्ट्रीय एवं प्रादेशिक स्तर के मेलों में भाग लिया।
- बस्तर क्षेत्र में 43 बांस से बने स्कूल हैं।
- जगदलपुर के लामनी पार्क में देशभर के बांसो की कई प्रजातियॉ लगायी गई हैं। यह प्रदेश का प्रथम बांस सेंटम हैं।
- बेमेतरा के कठिया में दुनिया का सबसे बड़ा बांस टावर बनाया गया है, यह टावर 140 फीट ऊॅचा हैं। इसे गोल्डन बुक ऑफ डब्ल्यू आर में शामिल किया गया हैं।
- छत्तीसगढ़ एक आदिवासी बाहुल्य राज्य है। यहॉ के लोगों की अर्थव्यवस्था जल, जंगल एवं जमीन से जुड़ी है, इसी से जुड़ी एक कला बांस आर्ट जिसमें ग्रामीण बांस से सामग्री बनाकर अपनी आर्थिक स्थिति सुधार रहे हैं।
- महासमुंद के कारीगर बांस से बच्चों के खिलौने बनाते हैं। इसके अलावा बांस से गमले के फूल एवं पत्ते तैयार किये जाते हैं।
- जशपुर की महिलाएॅ बांस से टोकरियॉ तैयार करती है।

2. **छ.ग. सरकार द्वारा बांस प्रोत्साहन हेतु चलाई जा रही योजनाएॅ**

1. **मुख्यमंत्री बांस विकास योजनाः** योजनांतर्गत समस्त वर्ग के कृषकों/हितग्राहियों की मांग अनुसार उनकी बाड़ी, निजी भूमि तथा कृषि भूमि पर प्रदेश में पाये जाने वाली बांस प्रजाति एवं उच्च गुणवत्ता के टिशु कल्चर बांस पौधों का रोपण कराया जाता हैं।
2. **बांस वनों का पुनरोद्धारः** इस योजना के अंतर्गत प्रदेश के बसोड़ों, पानबरेजा परिवारों एवं बांस का काम करने वाले हस्तशिल्प कारीगरों को अधिक मात्रा में बांस उपलब्ध कराने के उद्देश्य से वन एवं वनोत्तर क्षेत्रों में बिगड़े वनों का सुधार एवं बांस रोपण कराया जाता हैं।

संभावनाएॅ

सरकार द्वारा छत्तीसगढ़ के बेमेतरा जिला में स्थित भव्य सृष्टि उद्योग द्वारा बांस का प्रयोग कर कई प्रकार के उत्पाद तैयार किये जा रहे हैं जिसे स्टील के स्थान पर प्रयोग किया जा रहा है। यदि छत्तीसगढ़ में बांस के अच्छी किस्मों के उत्पादन को बढ़ाया जाता है, तो सरकार द्वारा बांस उद्योग को बढ़ावा देने हेतु योजना लायी जाए एवं इस पर अनुसंधान कर इसे बड़े स्तर पर फैलाया जा सकता है, जिससे लोगों को रोजगार प्राप्ति के साथ–साथ छत्तीसगढ़ को आर्थिक लाभ की प्राप्ति होगी। इसके अलावा बांस शिल्पकारों द्वारा बनाएॅ गए उत्पाद को बाजार उपलब्ध कराकर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर इसकी पहचान एवं उपयोगिता बतायी जा सकती हैं। बांस उद्योग पूर्णरूप से पर्यावरण हितैषी हैं।

संदर्भ सूची

1. आर्थिक सर्वेक्षण वर्ष 2022–23।
2. www.chhattisgarhgyam.in, Accessed on 07/04/2023.
3. www.sahapedia.org, Accessed on 07/04/2023.

––==00==––